2

जीवित आशा में आनन्द करो
(1 पतरस 1:3-12)

समझदार व्यक्ति आशा रखता है, क्योंकि कारण उसे आशा रखना बताता है। जब यह विश्वास करने का कारण हो कि आने वाला कल बेहतर होगा तो हम कठिनाइयों से जूझ सकते हैं। पतरस द्वारा अपने पाठकों के सामने रखी आशा समझदार व्यक्ति की आशा ही है।

आशा जीवित है क्योंकि यीशु जीवित है (1:3-5)

आत्मिक अगुवे ने उन्हें जो हाल ही में मसीह से जुड़े थे और जिन्हें उसके नाम के लिए बोझ सहने को बुलाया गया था, क्या कहना था? धन्य आशा की ओर आनन्द से देखते हुए उन्होंने नया जीवन आरम्भ किया था, परन्तु उन्होंने पड़ोसियों द्वारा उनसे दूर रहने, अधिकारियों द्वारा पीछा किए जाने और जीवन की आवश्यकताएं न दिए जाने की परवाह नहीं की। पतरस ने आशा की ओर ध्यान दिलाया। अध्याय 1 में उसने तीन बार (आयतें 3, 13, 21) और अध्याय 3 में फिर दो बार (आयतें 5, 15) में इस शब्द का इस्तेमाल किया। 1 पतरस को ''आशा की पत्री'' और पतरस को ''आशा का प्रेरित'' कहा गया है। यह कह पाना कठिन होगा कि पतरस ने नये नियम के अन्य लेखकों से अधिक बार आशा की ओर ध्यान दिलाया। उदाहरण के लिए रोमियों के तीन अध्यायों में (5, 8 और 12) पौलुस ने कुल पन्द्रह बार इस शब्द का इस्तेमाल किया है। 1 पतरस को ''आशा की पत्री'' कहना ओवरस्टेटमैंट हो सकता है, परन्तु इसमें कोई संदेह नहीं कि आशा ही अध्याय 1 के संदेश का आधार है। मसीही आशा समय के अन्त के साथ अर्थात प्रभु के प्रकट होने और सब वस्तुओं के भस्म होने के साथ मज़बूती से जुड़ी है (1:5, 7, 9, 13)।

पतरस के पाठकों को मालूम था कि यीशु मुर्दों में से जी उठा है। वे एक जीवित आशा में नया जन्म पाए हुए थे। जीवित इसलिए क्योंकि मसीह जीवित प्रभु के रूप में राज करता है (1:3, 21)।

इस जीवित आशा में कौन सहभागी हो सकता है? पतरस ने कहा कि जो लोग ''नया जन्म'' पाए हुए हैं, वे इसमें सहभागी हो सकते हैं (1:3)। KJV परमेश्वर के ''हमें फिर से जन्म देने'' और NIV ''उसने हमें नया जन्म दिया है,'' की बात कहता है। पतरस यीशु की बात ही कह रहा था, जो उसने लगभग पैंतीस साल पहले निकुदेमुस से कही थी। जीवित आशा जल और आत्मा से जन्म लेने के द्वारा ही आती है (यूहन्ना 3:5)। ''जल और आत्मा से जन्म'' का वाक्यांश बपतिस्मे के विषय में ही है। बपतिस्मे में प्रभु के साथ मिलकर जी उठने पर ही व्यक्ति जीवित आशा में सहभागी होने के लिए नये सिरे से जन्म लेता है। बपतिस्मे के पानी में मसीह के लहू से भेंट करने पर, ''जीविते और सदा ठहरने वाले वचन के द्वारा'' उसे नया जन्म मिलता है (1:23)।

यह जीवित आशा क्या है जिस पर मसीही लोग नज़रें टिकाए हुए हैं? पतरस ने कहा कि

यह स्वर्गीय मीरास, अविनाशी, निर्मल, अजर और कभी न मुरझाने वाली है (1:4)। यूनानी शब्द के अनुवाद ''मीरास'' का किसी के हिस्से या भाग की स्वीकृति से कोई सम्बन्ध नहीं है। मसीही व्यक्ति का भाग वारिस होने का है। गलातियों 4:1-7 में पौलुस ने पुत्र के भाग के साथ नौकर के भाग का अन्तर किया। मसीह में हमें उस मीरास का पूरा आनन्द मिलता है, जो केवल परमेश्वर अपने पुत्रों और पुत्रियों को दे सकता है।

शायद स्वर्ग में भाग का विचार पतरस के आरम्भिक पाठकों के लिए आज के अधिकतर लोगों से अधिक स्वर्गीय था। प्रभु की वापसी और स्वर्ग की मीरास, स्वास्थ्य सम्भाल के बढ़ रहे खर्च या पड़ोसियों को प्रभावित करने वाले मज़बूत प्रबन्ध लगाने की सम्भावना से तुलना करने पर कम लोगों का ध्यान खींचता है। आज क्या कोई पुरुष या स्त्री ऐसा विचार कर सकता है, जो उस स्वर्गीय प्रतिज्ञा के पूरा होने की प्रतीक्षा करवा सके? पतरस ने एक उत्तर दिया: ''उस उद्धार के लिए जो आने वाले समय में प्रगट होने वाला है'' (1:5), ''यीशु मसीह के प्रकट होने पर प्रशंसा, और महिमा'' (1:7) और ''यीशु मसीह के प्रगट होने के समय'' मिलने वाला अनुग्रह (1:13) हर विजय, पराजय, लक्ष्य, आनन्द और जीवन के शोक को प्रभावित करेगा। अन्त समय पर विचार संसार में लंगर लगाए हृदय को स्वस्थ कर सकता है।

सताव के बावजूद आनन्द रहता है (1:6-9)

अपने विश्वास के कारण कष्ट सह रहे मसीही लोगों से पतरस क्या कह पाया? आशा की विनती स्वाभाविक प्रतीत होती है, परन्तु आनन्द उससे जुड़ा नहीं लगता। तौ भी पतरस ने मसीह में उनके आनन्द का असीमित स्मरण दिया। KJV अनावश्यक प्रतीत होता है, परन्तु यह यूनानी को भी व्यक्त करता है: ''तुम अकथनीय और महिमा से भरे आनन्द से मग्न होते हो'' (1:6)। यूनानी वाक्यांश अनुवाद किए से कहीं अधिक उत्तम अवस्था से चलता है। यह आनन्द किस बात पर था? पतरस के कहने का अर्थ था, परमेश्वर का पुत्र तुम से प्रेम करता है और तुम उसके पास उससे प्रेम करने के लिए आए हो। उसने अपना जीवन तुम्हें पाप से छुड़ाने के लिए दिया है। अब भी जब तुम कष्ट सहते हो, तुम्हें तुम्हारे विश्वास का लक्ष्य अर्थात तुम्हारे प्राणों का उद्धार प्राप्त हो रहा है। वास्तव में तुम अकथनीय आनन्द से आनन्दित हो सकते हो।

नि:संदेह मसीह हमें संसार का सबसे बेहतरीन जीवन देता है, परन्तु देने का उसका एक ढंग हमारे मनों को अनन्तकाल की ओर लगाना है। 1 पतरस को पढ़ने पर हम इस बात से बच नहीं सकते कि प्रेरित के मन में हमेशा अनन्तकाल का विचार ही है। पतरस कह रहा था, ''हो सकता है तुमने उसे अपनी आंखों से न देखा हो, परन्तु तुम ने उस पर विश्वास किया है और विश्वास से तुम्हारे प्राणों का उद्धार होता है।'' कई बातें अनन्तकाल को हमारे सामने रख सकती हैं: कृपा दृष्टि का दिन (2:12), परमेश्वर के दाहिने हाथ यीशु (3:22), जीवतों और मरे हुओं का न्याय करने की परमेश्वर की इच्छा (4:5), सब बातों का अन्त निकट होना (4:7), उसकी महिमा का प्रकाश (4:13), प्रधान चरवाहे का प्रकट होना (5:4)। जब हम अपना ध्यान अनन्तकाल पर लगाते हैं तो अपनी छोटी-छोटी पराजयों और विजयों के साथ यह संसार हमारी आंखों से ओझल होता है। मसीह को जानने का अर्थ अपनी स्थिति का फिर से ज्ञान पाना है। मसीह हमें जीवन भर एक नया विचार देता है, वह विचार जो निराशाजनक दृश्य को आनन्द में बदल देता है।

नबियों की सेवकाई के द्वारा प्रोत्साहित करता है (1:10-12)

पतरस ने अपने पाठकों को उन नबियों की याद दिलाई, जिन्होंने यीशु के जन्म, जीवन और शिक्षाओं के बारे में लिखा था। उनकी सेवकाई नये नियम के सर्वमान्य गवाही की है। पतरस पुराने नियम की गवाही की वैसे ही बात कर रहा हो सकता है, जैसे लूका 24:27 में यीशु ने की, परन्तु एक और सम्भावना है। नये नियम के नबी भी इसमें शामिल किए जा सकते हैं। पतरस के मन में नबी पुराने नियम के हों या नये नियम के, परमेश्वर ने अपने दूतों को चुने हुए और चुनिंदा लोगों को मीरास के लिए तैयार करने के लिए भेजा। नबियों ने पतरस के पाठकों की सेवा की और उन्हें भक्तिहीन लोगों के ठट्ठे सहने के योग्य बनाया। नया जन्म पाकर वे परमेश्वर की उद्देश्यपूर्ण आशीष पाने वाले बन गए। यह आशीष स्वर्ग से भेजे गए महिमा भरे पवित्र आत्मा द्वारा बताई गई है।

सारांश

पतरस की बातों ने एक आधार बना दिया और मसीही लोगों को अपने विश्वास की महान मूल बातों को याद करने के लिए उत्तेजित किया। वह जीवित आशा जिसमें उन्हें मसीह के जी उठने के द्वारा बुलाया गया था, हर प्रकार के कष्ट को कम कर देता है। उन्हें दी गई आशा और प्रतिज्ञा उस आनन्द का कारण बनती है, जिसे संसार की रुकावटों से मिटाया नहीं जा सकता। सबसे बढ़कर पतरस ने उन्हें याद दिलाया कि वे ही हैं जिनकी सेवा नबियों ने की थी। वे अपने लोगों के लिए परमेश्वर की सनातन मंशा के वारिस थे। पतरस का पत्र आज से लगभग दो हज़ार वर्ष पूर्व लिखा गया था, परन्तु इसका संदेश आज भी परमेश्वर के लोगों को उकसाता है। मसीही लोगों का होने वाला थोड़ा सा विरोध आशा और महिमा की प्रतिज्ञा के सामने कुछ भी नहीं है। पतरस को अपने पत्र में बहुत और बातें कहनी थीं, परन्तु सब बातें मसीह में होने के आनन्द के प्रकाश में ही समझी जानी थीं।